सं ग्रो.वि./यमुना/5-84/13491.—-चूंकि हरियाणा के राज्यताल की राय है कि एनसीयन (एस० एण्ड टी०) हरियाणा राज्य बिजली वोर्ड इन्डस्ट्रीयल ऐरिया, यमुना नगर के श्रमिक श्री दयाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें . लिखित मामले इसके बाद में कोई ग्रौद्योगिक चिवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्य करना वांछनोत्र समझते हैं;

इस लिए, भव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415-3-शम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रीधसूचना सं. 11495-श्री-शम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीदसूचना की धारा 7 के श्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखामामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत सथवा सम्बन्धित मामला है:—

भ्या श्री दयाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह कित राहत का हकदार है ?

सं श्री.वि./हिसार/19-84/13502.—-भूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि दि मण्डी डबवाली को-ग्राप्रेटिव मार्केटिंग-कम-प्रेक्सैसिंग सोसाईटी लि. मण्डी डबवाली, सिरसा के श्रीमक श्री राजेश कृषार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

मीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, भव, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15251, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढते हुए श्रधिसूचना सं० 11495-जी. श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राजेश कुमार की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं भी.वि./ग्रम्त्राला/43-84/13509.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि कार्यकारी ग्रमियन्ता (ग्रीप्रेशन) हरियाणा राज्य विजली बोई, शाहबाद मारकण्डा, कुरुतेल के श्रमिक श्री सुरेन्द्र कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीबोगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना बाछनीय समझते हैं 🕻

इसलिए, श्रब, श्रीखोगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मन्तियों का प्रयोग करते हुये, हिस्याणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं० 11495-जी. श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिसूचन की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं बो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीचया तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सुरेन्द्र कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भी. वि./हिसार/136-83/13515.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) नियंत्रक हरियाणा राज्य परिवहन, चण्डीगढ़ (2) जनरल मैनेजर हरियाणा राज्य परिवहन, सिरसा, के श्रमिक श्री विजय कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखिश मामने में कोई श्रीखोगिक विवाद है;

मौर भूंकि इरियाणा के राज्यपाल, विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:

इसलिए, अब, मौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिस्तवों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधसूचना सं. 9641-1-भ्रम-70/32573, दिनोक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी मिधसूचना सं. 3864-ए.ए स.मो.(ई) श्रम/70/13648, दिनोक 8 मई, 1970 हारा उन्त मिधनियम की क्षारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :---

क्या श्री विजय कुमार की सेवाओं का समापन व्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो बह किस राहत का हमशर है ?

सं. श्री.बि/सोनीपत/17-84/13523.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है, मै. मैटाकेम इण्डस्ट्रीज, भागपत खेवड़ा रोड, बहालगढ़, सोनीपत-131021 के श्रीमक श्री भगवत दयाल शर्मा तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके,बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, प्रव, घोलोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिस्चना सं. 9641-1-अम-70/32573, दिनांक 6 नवण्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी प्रधिस्चना सं. 3864-ए.एस.घो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:——

क्या श्री भगवत दयाल शर्मा की सेवाझों का समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

एस. के. महेश्वरी,

संयुक्त सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।

PUBLIC WORKS DEPARTMENT BUILDING AND ROADS BRANCH

Order

The 29th March, 1984

In partial supersession of notification No. Z-42-A/VI/291-B, dated 27th October, 1981 published in Haryana Govenment Gazette, dated 27th October, 1981 whereas the land described in the Haryana Govenment, Notification and date referred to above, issued under section 6 of the Land Acquisition Act, 1984 has been declared to be needed at the expense of P. W. D., B. and R. Branch, for a public purpose, namely, for constructing a road from Kitlana to Goripur in Bhiwani District.

Now therefore, in exercise of the powers conferred by section 7 of the Land Acquisition Act, 1984 the Governor of Haryana, hereby directs the District Revenue Officer, Bhiwani, to take order for the acquisition of the land described in the specifications appended to declaration published with the aforesaid notification.

(Sd.) . . .,

Superintending Engineer, Bhiwani Circle, P. W. D., B. & R. Branch, Bhiwani.